एक गॉस्पेल गायक ने लिखा: “जिस प्रकार याकूब को प्राचीन काल में दिखाया गया था — क्रूस स्वर्ग की ओर जाने वाली सीढ़ी बन गया है।” (हिम्न संख्या 81, पद 2) यह वाक्य क्रूस की भूमिका के बारे में एक गहरी बाइबिल‑सत्यता को उजागर करता है। यह उस समय की बात करता है जब याकूब Jacob बेतेल में विश्राम कर रहे थे और उन्हें एक दर्शन मिला — एक बड़ी सीढ़ी, जो पृथ्वी से स्वर्ग तक जा रही थी, और उस पर स्वर्गदूत ऊपर‑नीचे जा रहे थे। (उत्पत्ति 28:11‑12)

“और वह एक स्थान पर पहुँचा और वहाँ रात रुक गया क्योंकि
सूर्य अस्त हो गया था। उसने उस स्थान का एक पत्थर अपने सिर
के नीचे रखा और वहीं सो गया। और उसने सपना देखा‑ और देखो, पृथ्वी पर एक सीढ़ी लगी थी, और उस सीढ़ी का शीर्ष स्वर्ग तक पहुँचा; और देखो—the परमेश्वर के दूत उस पर ऊपर‑नीचे जा रहे थे।” (उत्पत्ति 28:11‑12)

यह सीढ़ी, जिसे याकूब ने देखा, स्वर्ग तक अंतिम रूप से पहुँचने की ओर संकेत करती थी: Jesus Christ का क्रूस। क्रूस के द्वारा हमें स्वर्गीय क्षेत्र में प्रवेश मिलता है; उनके बलिदान द्वारा पापी मानवता और पवित्र परमेश्वर के बीच की खाई भरी जाती है। यह क्रूस ही वह “सीढ़ी” बन जाता है जिसके माध्यम से हम पिता तक पहुँचते हैं।

“यीशु ने उससे कहा: ‘मैं मार्ग हूँ, मैं सत्य हूँ, मैं जीवन
हूँ; मेरे द्वारा ही कोई पिता के पास नहीं आता।’”
(यूहन्ना 14:6)

यीशु के क्रूस के द्वारा, हम परमेश्वर से मिल पाते हैं। यह मुक्ति का मार्ग है। लेकिन मैं चाहूंगा कि हम क्रूस को एक और दृष्टिकोण से देखें — “जीवन बनाने के लिए एक उपकरण” के रूप में। इसके लिए आइए हम बाइबिल की एक कहानी देखें, जिसमें Elisha और भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र शामिल हैं। यह कहानी हमें यह समझने में मदद करेगी कि क्रूस हमारे जीवन को बनाने वाला एक उपकरण कैसे है।

“भविष्यद्वक्ताओं के पुत्रों ने एलिशा से कहा: ‘देखो, जहाँ
हम तेरी देख‑रेख में रहते हैं, वह स्थान हमारे लिए बहुत तंग
है; चलो हम यार्डन जाएँ और वहाँ प्रत्येक एक लकड़ी काटे, और वहाँ हमारे रहने की जगह बनायें।’ उसने कहा: ‘जाओ!’ फिर उनमें
से एक बोला: ‘कृपा कर के हमारे साथ चलो।’ उसने कहा: ‘मैं जाऊँगा।’ सो वह उनके साथ गया। जब वे यार्डन नदी पहुँचे, तो उन्होंने पेड़ काटे। पर जब कोई एक लकड़ी काट रहा था, उसका कुल्हाड़ी‑सर पानी में गिर गया, और वह चिल्लाया: ‘हे मेरे स्वामी! यह उधार था।’ तब परमेश्वर के पुरुष ने पूछा: ‘यह कहाँ

गिरा?’ जब उसने जगह दिखाई, उसने एक डंडी फेंकी; और लोहे का
सिर तैर उठा। और उसने कहा: ‘उसे उठा लो।’ उसने हाथ बढ़ाया और
उसे उठाया।” (2 राजा 6:1‑7)

इस कहानी में हमने एक सुंदर और गहरा रूपक देखा। उस कुल्हाड़ी‑सिर का अर्थ है—हमारे उपकरण: हमारा ज्ञान, हमारी क्षमताएँ, हमारे प्रयास—वे चीजें, जिन पर हम निर्माण, सृजन, उपलब्धि के लिए भरोसा करते हैं। लेकिन कभी‑कभी ये उपकरण असमर्थ हो जाते हैं या खो जाते हैं—ज्यों ही उस कुल्हाड़ी‑सिर पानी में गिर गया और डूब गया। उसी तरह हमारी कोशिशें, यदि मसीह में आधारित नहीं हों, वे निराशा, असफलता और हानि की गहराइयों में धँस सकती हैं।

कहानी में, एलिशा एक डंडी लेता है—एक ऐसा साधारण उपकरण—और उसे पानी में फेंक देता है। और लोहे का सिर तैरने लगता है! यह एक शक्तिशाली प्रतीक है कि क्रूस, जो दुनियाँ को कमजोर और मूर्खतापूर्ण प्रतीत हुआ, उसमें वह शक्ति है कि हमारे असफलताओं को मोचन दे, खोई हुई चीजों को बहाल करे।

क्रूस: पुनर्स्थापना का उपकरण
डंडी, जिसे एलिशा ने पानी में फेंका, यीशु के क्रूस का प्रतीक है। यीशु ने अपने नम्र क्रूस के माध्यम से हमारी सारी टूट‑फूट,

हमारी खोई हुई चीजें, हमारे टूटे हुए सपने—उठा लिए और उन्हें पूरा किया। क्रूस ही वह है जो हमारे हाथ में जो कुछ है, उसे फिर से अर्थ देता है।

हमारे प्रयास (जो उस लोहे की तरह हैं) केवल क्रूस द्वारा पुनर्स्थापित किन जा सकते हैं। यह हमें याद दिलाता है: कोई भी मानवीय प्रयास—चाहे कितना भी उत्कृष्ट या कुशल क्यों न हो—अपने आप हमारे जीवन को सचमुच नहीं बना सकता, यदि उसमें यीशु के काम का आधार नहीं हो। केवल क्रूस के माध्यम से हम खोई हुई चीजों को पुनः प्राप्त कर सकते हैं, और उसकी शक्ति द्वारा असंभव परिस्थितियाँ भी बदल सकती हैं।

“क्योंकि क्रूस की बात उनकी निकट तो मूर्खता है, जो नष्ट हो
रहे हैं; परन्तु हमारे लिए, जो उद्धार पा रहे हैं, वह ईश्वर
की शक्ति है।” (1 कुरिन्थियों 1:18)

क्रूस वह माध्यम है, जिसके द्वारा हमारा जीवन सचमुच निर्माण पाता है। यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान से हम संपूर्ण होते हैं। क्रूस के द्वारा हम न केवल परमेश्वर से मेल खाते हैं, बल्कि ऐसे जीवन के लिए सक्षम होते हैं जो परमेश्वर की महिमा लाता है। क्रूस हमारे जीवन, हमारे परिवार, हमारे कार्य, हमारी

भविष्य की नींव बन जाता है।

क्रूस: समर्पण का आह्वान
यह समझना महत्वपूर्ण है कि क्रूस सिर्फ दुःख का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह समर्पण का आह्वान है। यीशु हमें निमंत्रण देते हैं: अपना क्रूस उठाओ और मेरी पाठी चलो। इसका मतलब है—हमारी आत्म‑निर्भरता को त्याग देना और पूरी तरह से उनकी कृपा और शक्ति पर भरोसा करना।

“और जनता को तथा अपने शिष्यों को बुलाकर उन्होंने कहा: यदि
कोई मुझें पछे चलना चाहता है, तो वह अपने आपको त्यागे, अपना क्रूस उठाए और मेरा पाठी चले। क्योंकि जो अपनी जान बचाना
चाहते हैं, वह उसे खो देंगे; और जो मेरी और सुसमाचार के लिए
अपनी जान खो देंगे, वह उसे पाएँगे।” (मार्क 8:34‑35)

क्रूस एक दैनिक प्रतिबद्धता है—एक निर्णय है कि सब कुछ यीशु को सौंप दें। यह सिर्फ उद्धार का विषय नहीं है, बल्कि जो हम आए हैं—सदैव उनकी निर्भरता में जीने का विषय है। जब हम अपने आप को त्यागते हैं और क्रूस उठाते हैं, तो हम यही स्वीकार करते हैं कि हमारी कोशिशें‑योजनाएँ अकेले हमारे जीवन को नहीं बना सकती। केवल यीशु का अनुसरण करके और उनके क्रूस के काम को स्वीकार करके हम सचमुच जीवन पा सकते हैं।

आज हमारे जीवन में क्रूस
तो मैं आपसे प्रश्न करता हूँ: क्या मसीह का क्रूस आपके जीवन के केंद्र में है? क्या आपने अपना क्रूस उठाया है और उनका पाठी चले हैं, या आप अपनी शक्ति, अपने ज्ञान, अपनी उपलब्धियों पर भरोसा कर रहे हैं? यदि मसीह आपके हृदय में नहीं है, तो जीवन में चाहे कुछ भी आपने प्राप्त क्या हो—वह व्यर्थ होगा।

“क्योंकि मनुष्य को क्या लाभ होगा, यदि वह सारी दुनिया जीत
ले, और अपनी आत्मा खो दे? या मनुष्य अपनी आत्मा के बदले क्या
दे सकेगा?” (मत्ती 16:26)

इस संसार में सब कुछ खो देना—शिक्षा, करियर, संपत्ति, प्रतिष्ठा—बेहतर है, बशर्ते कि आपके हृदय में मसीह हो, बजाय इसके कि आप सब कुछ पायें और अपनी आत्मा खो दें। यीशु ने स्पष्ट कहा: “क्या न लाभ होगा मनुष्य को, अगर वह पूरी दुनिया जीत ले और अपनी आत्मा को गंवा दे?”

क्रूस मसीह का वह आधार है जिस पर सब कुछ अन्य चीजों को बनाया जाना चाहिए। जब हम यीशु के बलिदान की गहराई और उनके पुनरुत्थान की शक्ति को समझते हैं, तो हम यह जान पाते हैं कि हमारी जो कुछ भी है—हमारी क्षमताएँ, हमारे उपहार, हमारी उपलब्धियाँ—वे तभी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

अर्थ रखते हैं, जब हम उन्हें उनकी महिमा के लिए इस्तेमाल करें।

“और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं,
उनके लिए सब बातें मिलकर भले के लिए काम करती हैं, उन लोगों
के लिए जिन्हें उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है।” (रोमियों 8:28)

जब हम अपना जीवन यीशु मसीह के क्रूस के अधीन समर्पित करते हैं, तो हमारे जीवन के टूटे‑ते हिस्से भी उद्धारित होते हैं और परमेश्वर के अच्छे उद्देश्य के लिए जोड़ दिये जाते हैं।

यदि आपने अभी तक अपना जीवन प्रभु यीशु को नहीं सौंपा है, तो आज ही वह दिन है। वह आपकी मदद करेंगे—आपका जीवन फिर से बनाएँगे, बहाल करेंगे और उद्धारित करेंगे। यदि आपको यीशु को अपने हृदय में स्वीकारने में सहायता चाहिए, तो हम आपकी सहायतार्थ तैयार हैं।

ईश्वर आपका भला करे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp